पाठ 14

प्रेरक प्रसंग

● संकलित

आइए, सीखें : समय का महत्व, त्याग, सेवा भावना, परिश्रम, लगन व ईमानदारी के गुणों का विकास करना।
♦ योजक चिह्न का प्रयोग ।

विश्व में अनेक महापुरुष हुए हैं। उनके आचरण और क्रिया शीलता नें समूचे विश्व का मार्गदर्शन किया है। उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्तकर अनेक लोगों ने अपने जीवन को सफल बनाया। उनेक जीवन के संघर्ष नें अभावों में भी ऊपर उठने और श्रेयस्कर जीवन जीने की शक्ति प्रदान की। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वे सतत् क्रियाशील रहकर शीर्ष पर पहुँचे और पीढ़ियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए। उनका यह आचरण ही प्रेरक-प्रसंग के रूप में हमारे सामने है।

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी

ज्ञान और प्रयत्न साधना

महावीर प्रसाद द्विवेदी के जीवन के ऐसे कई प्रसंग हैं जिनके कारण वे साहित्य और समाज के ध्रुव तारा बन गए हैं। उनका जन्म निर्धनता की गोद में हुआ और लालन पालन अभावों की कुटिया में। शिक्षा के प्रति उनका अनुराग प्रगाढ़ ही रहा। वे केवल तेरह वर्ष की अल्पायु में छब्बीस मील दूर रायबरेली के जिला स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने गए। आवश्यकता का सभी सामान पीठ पर लाद कर ले जाते थे। इतनी कम आयु में ही उन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत,उर्दू, अंग्रेजी और फारसी का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया था। उनकी स्कूली शिक्षा फतेहपुर और उन्नाव में पूरी हुई ।

स्कूली शिक्षा के बाद वे जी.आर.पी. रेलवे में तार बाबू बने। ज्ञान लिप्सा और सतत् प्रयत्न के आधार पर उनकी पदोन्नति हुई। कुछ समय बाद उन्होंने रेलवे की नौकरी छोड़ दी और वे 'सरस्वती पत्रिका' का सम्पादन करने लगे। उनके जीवन का ध्येय केवल साहित्य साधना ही नहीं बल्कि समाज की सेवा करना भी था।

शिक्षण संकेत -
♦ किसी महापुरुष के प्रेरणादायी प्रसंग से पाठ का आरंभ करें। ♦ पाठ का शुद्ध उच्चारण करें तथा बच्चों से करवाएँ। ♦ जीवन में विश्वास, परोपकार, सेवा, त्याग, परिश्रम, लगन एवं ईमानदारी जैसे गुणों के महत्व पर चर्चा करें।

समय साधना

जीवन में समय का बड़ा महत्व है। समय की साधना मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारती है ।

एक बार राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदीजी से मिलने के लिए गए। अचानक उनका ध्यान दरवाजे पर लटकी तख्ती पर गया। जिस पर लिखा था 'प्रात:काल भेंट न हो सकेगी।' यह देखकर उन्होंने मिलने का कार्यक्रम शाम को बना लिया। शाम को द्विवेदीजी से मिलने के बाद उन्होंने तख्ती पर लिखी बात का रहस्य पूछा। द्विवेदीजी मुस्करा उठे और बोले- बात यह है कि प्रात: मैं सरस्वती के सम्पादन का कार्य करता हूँ। पत्रिका स्तर के अनुसार उस पर श्रम भी करना पड़ता है। यदि एकाग्रतापूर्वक यह कार्य न किया जाये तो उसमें उत्कृष्टता नहीं आ सकती। प्रात: काल का समय मानसिक कार्यों के लिए अधिक उपयोगी रहता है ।

एक बार साहित्यकार श्री सद्गुरूशरण अवस्थी अपने मित्र के साथ द्विवेदीजी से मिलने गए। द्विवेदीजी उनसे प्रेम से मिले, किन्तु समय की कमी के कारण पहले ही संकेत कर दिया- 'हम समझते हैं कि अपनी बात पन्द्रह मिनट में पूरी हो जाएगी।' उन्होंने नपे-तुले शब्दों में बातचीत की। समय पूरा होने पर द्विवेदीजी ने पुन:स्नेह से पूछा- ''और कोई विशेष बात तो नहीं रह गई।'' अवस्थीजी ने उत्तर दिया 'इतनी जल्दी बात पूरी होने की तो हमें आशा ही नहीं थी।' द्विवेदीजी ने आगे कहा-पूर्व निर्धारित समय के बिना काम करने से एक कार्य दूसरे की सीमा में अकारण घुस जाता है और सारी व्यवस्था चौपट कर देता है। पूर्व निर्धारित समय में कार्य करने का संकल्प मनुष्य की शक्तियों में निखार लाता है ।

सेवा-साधना

द्विवेदीजी का जीवन साहित्य शिल्पी के साथ-साथ संत स्वभाव का था। द्विवेदीजी के विचार सिर्फ मन की तरंगे भर नहीं थे अपितु उनका समूचा जीवन इन्हीं भावों से ओतप्रोत था।

एक बार पुरूलिया कुष्ठ आश्रम के बारे में एक लेख पढ़ा। पढ़कर जो भाव आए उन्हें सम्पादक को लिख भेजा। भाई तुम्हारा लेख पढ़कर रो पड़ा। मैं बड़ी देर तक विह्वल रहा। मेरे हृदय में अजीब परिवर्तन हो गया है। दूसरों का दुख सहज दूर नहीं किया जा सकता। पेंशन के सात रूपये में से पाँच भेज दिए हैं अब मन बेचैन है कि सातों रुपये क्यों नहीं भेजे?

एक बार रास्ते में जाते समय देखा कि एक किसान नया अन्न खाकर बीमार पड़ गया है। बस, लौट चले घर की ओर, घर जाकर दवा लेकर ही लौटे।

बनारसीदास जी के पूछने पर उन्होंने कहा सेवा और साहित्य रचना जीवन के अलग-अलग दो पहलू मात्र नहीं हैं, वरन ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

2. अब्राहम लिंकन

लिंकन नाम का एक गरीब लड़का था। वह लट्ठों से छाए हुए घर में रहता था। जब वह अपने अमीर साथियों को पढ़ने के लिए स्कूल जाते देखता तो सोचता–ये पढ़ने जाते हैं । इनके पास सुख के अनेक साधन हैं। ये बड़े होकर कुर्सी पर बैठेंगे। सोच–विचार के बाद उसने निर्णय किया– क्या हुआ यदि मेरे माँ–बाप के पास मुझे स्कूल भेजने के लिए पैंसे नहीं है। मैं स्वयं कमाऊँगा भी और पढूँगा भी।

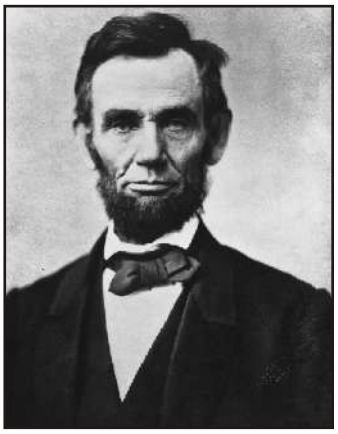

वह बालक दिन–भर खेतों में गल्ला उठाने–धरने का काम करता, दिन ढलने पर घर आता, भोजन करता और दिया जलाकर पढ़ने के लिए बैठ जाता। यह सिलसिला रोज़ चलने लगा। पढ़ने की लगन थी, आधी रात तक वह पढ़ता रहता पर उसे थकान न लगती।

किताबें उसके पास न थीं। पढ़ने–लिखने के लिए वह माँग–माँगकर अपना काम चला लेता था। एक बार उसने किसी से किताब माँगी। काम से लौटने के बाद उसने पढ़ना शुरू किया और पढ़ते–पढ़ते सो गया। चिराग जलता रहा, किताब खुली पड़ी रही। मुँह–अंधेरे जब वह जागा तो सर्दी में पड़े रहने से उसकी देह ऐंठ गई, कोहरे से किताब भीग गई।

दिन चढ़ते ही उसे काम पर जाना था। किताब लौटानी थी, वह भागता–भागता किताब वापस करने गया किन्तु जिसकी किताब थी, उसने ओस से भीगी किताब को लेना स्वीकार न किया। उसने कड़कती हुई आवाज में कहा, ''मुझे या तो नई किताब लाकर दो या पूरे–पूरे दाम दो। अगर तुम कुछ नहीं कर सकते हो तो तुम्हें चार दिन मेरे खेत में काम करना होगा। खाना मिलेगा, तनख्वाह नहीं। इस तरह तुम्हें किताब का हरजाना देना होगा।''

लिंकन ने इसे स्वीकार कर लिया। उसने चार दिनों तक अथक परिश्रम करके किताब का दाम चुकाया। उसे खुशी थी, अब किताब उसकी हो गई थी। वह जब चाहे तब पढ़ सकता था।

उसे पढ़ने का इतना चस्का था कि वह गणित के सवाल लकड़ी के लट्ठों पर हल किया करता था। लकड़ी का जला हुआ कोयला उसकी पेंसिल थी। लट्ठों को उसने कॉपी और डेस्क बना रखा था।

जिस गरीबी से उसे पढ़ने की प्रेरणा मिली उसी से उसे प्यार हो गया। उसने कभी भी गलत ढंग से पैसा नहीं बटोरा, वरन् अपनी विद्या से खर्चा चलाने–भर को ही कमाया। वकील बनकर उसने गरीबों को सहारा दिया।

यही बालक लिंकन आगे चलकर अपनी लगन, ईमानदारी, परिश्रम और योग्यता के बल पर अमेरिका का प्रेसीडेन्ट बना।

नए शब्द

शीर्ष = चोटी, शिखर। **प्रतिकूल** = विपरीत, जो अनुकूल न हो। **ध्रुवतारा** = वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् स्थिर रहता है, वह तारा जो हमेशा उत्तर दिशा में रहता है। **आभा** = चमक, कांति, शोभा । **प्रगाढ़** = गहरा, बहुत अधिक । **निखारना** = निर्मल बनाना, साफ करना, चमकाना । **शिल्पी** = रचनाकार, सर्जक, कारीगर (भवन निर्माता)। **ओत-प्रोत** = खूब भरा हुआ, पूरी तरह भीगा/डूबा हुआ। **विह्वल** = व्याकुल। **लट्ठा** = लकड़ी का मोटा बड़ा टुकड़ा। **गल्ला** = अनाज। **चिराग** = दीपक । **देह** = शरीर। **हरजाना** = जुर्माना । **अथक** = बिना थके, अत्यधिक। **चस्का** = चाव, लत। **डेस्क** - छोटी चौकी, ढालू मेज।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठि प्रश्न-

(क) सही जोड़ी बनाइए-

अथक	-	दिन
कड़कती	-	लड़का
चार	-	आवाज
गरीब	-	परिश्रम

(ख) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(अ) अब्राहम लिंकन नाम का एक.....लड़का था। (अमीर,गरीब)

(ब) आधी रात तक लिंकन .....रहता। (पढ़ता, सोता)

(स) द्विवेदीजी ने .....में नौकरी की और तार बाबू बने।(रेलवे, डाकघर)

(द) द्विवेदीजी ने नौकरी छोड़ दी और वे ..... पत्रिका का संपादन करने लगे (लक्ष्मी, सरस्वती)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) महावीर प्रसाद द्विवेदीजी ने किस पत्रिका का संपादन किया?

(ब) द्विवेदीजी ने किन-किन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया?

(स) लिंकन गणित के सवाल किस पर हल करते थे?

(द) लिंकन ने सर्वोच्च पद किसके बल पर प्राप्त किया?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) द्विवेदीजी के प्रेरक प्रसंग पढ़कर आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(ब) द्विवेदी सुबह के समय किसी से क्यों नहीं मिलते थे?

(स) समय नियोजन को स्पष्ट करने वाली द्विवेदीजी के जीवन की घटना बताइए।

(द) अब्राहम लिंकन की दिनचर्या कैसी थी?

(ई) लिंकन ने किताब का दाम किस प्रकार चुकाया?

भाषा की बात-

1. बोलिए और लिखिए-

विद्वान, श्रेणी, कौटुम्बिक, सरस्वती, राष्ट्रभाषा, दुरावस्था, रायबरेली, प्रलोभन, प्रधान, ट्रैफिक, मैनेजर

■ **ध्यान दीजिए-**

एक परिवार रोजी-रोटी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। उस परिवार में माँ-बाप के साथ **सात-आठ** साल का छोटा-सा बालक दौड़ता-हाँफता जल्दी-जल्दी चला जा रहा था।

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखाकिंत शब्द रोजी-रोटी, इधर-उधर, माँ-बाप, सात-आठ, छोटा-सा, जल्दी-जल्दी शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन शब्दों में 'माँ-बाप' सामासिक शब्द 'रोजी-रोटी' 'इधर-उधर' 'सात-आठ' युग्म शब्द, छोटा-सा समानता सूचक शब्द और जल्दी-जल्दी पुनरूक्त शब्द हैं। शब्दों को जोड़ने के लिए शब्दों के मध्य योजक चिह्न (-) का प्रयोग किया गया है।

2. सही जोड़ी बनाइए-

सामासिक शब्द	-	थोड़ी -सी
पुनरूक्त शब्द	-	सुख-दुख
युग्म शब्द	-	पेट-पूजा
समानता सूचक शब्द	-	पूरे-पूरे

3. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में लिखिए-

साथी	-	साथियों
कठिनाई	-	.....
किताब	-	.....
नौकरी	-	.....

गरीब – .....

लेखक – .....

4. दिए गए उदाहरण के अनुसार विलोम और समानार्थी शब्द लिखिए-

विलोम शब्द			**समानार्थी शब्द**		
सर्दी	–	गर्मी	रात	–	रात्रि
सुख	–	.....	घर	–	.....
उन्नति	–	.....	वर्ष	–	.....
मालिक	–	.....	महीना	–	.....
गरीबी	–	.....	स्नेह	–	.....

■ **यह भी जानिए-**

अ. काम करके मेरी किताब का हरजाना दो।

ब. वकील बनकर उसने गरीबों को सहारा दिया।

स. नए-नए काम लेकर उनकी पदोन्नति करते गए।

द. एक दफा को छोड़कर उन्हें कभी तरक्की के लिए दरखास्त नहीं देनी पड़ी।

उक्त वाक्यों में 'कर' 'बन' 'ले' 'छोड़' मूल क्रियाएँ हैं 'कर' प्रत्यय से योजित होकर ये पूर्वकालिक क्रिया बन गई। इसमें कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है।

5. निम्नलिखित क्रियाओं के पूर्वकालिक क्रियारूप बनाइए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

जाग, माँग, खेल, लौट, खा, नहा, घूम, उड़, उठा

■ **इसे भी समझिए -**

मूल विशेषण	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
गुरू	गुरूतर	गुरूतम
दढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
लघु	लघुतर	लघुतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम

गुरू, दृढ, लघु, अधिक, प्रिय विशेषण सामान्य गुण-दोष का बोध कराते हैं, 'तर ' प्रत्यय उन्हें दो के बीच तुलनात्मक और 'तम' प्रत्यय उन्हें एक की अनेक से तुलना के लिए रूप प्रदान करता है।

7. **कठोर, निम्न, दीर्घ, कम, मधुर शब्दों में 'तर' 'तम' प्रत्यय लगाकर उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के विशेषण बनाइए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

अब करने की बारी

- कुछ विश्व प्रसिद्ध महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग पढ़िए।
- भारत के राष्ट्रपतियों की सूची बनाइए और किसी एक के जीवन के विषय में रोचक जानकारी प्रस्तुत कीजिए।
- नित्य ही आपके आस-पास कुछ ऐसा होता है जिससे आपको विस्मय तो होता ही है, अनुकरणीय भी लगता है। ऐसे प्रसंगों को लिखने की कोशिश कीजिए। प्रेरक-प्रसंग अथवा लघुकथाएँ लिखना आपको रोचक लगेगा।